RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-03
Issue-11
November -2018

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com [UGC Listed Journal]

नवजागरण के स्त्री मुक्ति के प्रयासों के राह में 'अभ्युदय' उपन्यास

रेखा रानी

शोधार्थी, स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग, मगध विश्वविद्यालय, बोधगया, बिहार (भारत)

ARTICLE DETAILS

Article History
Published Online: 10 November 2018

Keywords
हिंदी नवजागरण, नवचेतना, लैंगिक विभेदीकरण,समकालीन, महिला सशक्तिकरण।

***Corresponding Author**
Email: rrani140489[at]gmail.com

ABSTRACT

उन्नीसवीं शताब्दी में समस्त भारत में एक नवीन चेतना का प्रचार व प्रसार हुआ। इस नवचेतना को महावीर प्रसार द्विवेदी जी ने हिंदी नवजागरण का नाम दिया। हिंदी नवजागरण ने साहित्य में वैज्ञानिक सोच का विकास किया। देश की पुरानी रूढ़ियों, परंपराओं और मान्यताओं के वैज्ञानिक परीक्षण पर जोड़ दिया। इतना ही नहीं नवजागरण ने देश के सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक पक्षों के यथार्थ को पूरी शिद्दत के साथ प्रस्तुत किया। नयी पीढ़ी के लेखकों के तर्कवादी दृष्टिकोणों की सहायता से भारतीय धर्म–संस्कृति की पुनर्व्याख्या करवा, धर्म और समाज में रूढ़ होती परंपराओं का विरोध करवाया। भारतीय पुरूष–प्रधान समाज में भोगवाद, अन्याय एवं शोषण का शिकार बनती स्त्रियों के मुक्ति और उनके उत्थान में भी हिंदी नवजागरण ने एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। स्त्री–उत्थान के लिए जो आवाज नवजागरण काल में उठी, वह सदियों बाद और अधिक व्रीव वेग से हिंदी साहित्य में गुंजी है। हिंदी नवजागरण के आरंभिक दौर के उपन्यासों से लेकर वर्तमान के उपन्यासों में स्त्रियों से जुड़ी समस्याएँ विशेषकर सामाजिक लैंगिक विभेदीकरण की समस्याएँ सदैव से ध्यानाकर्षण का विषय बनी रही हैं। युग–युग से पीड़ित व प्रताड़ित स्त्री–जीवन के विभिन्न पहलुओं और स्त्री–पुरूषों की समानता एवं महिला सशक्तिकरण के मुद्दों को अनेक उपन्यासकार मिथकों की सहायता से भी उठाते रहे हैं। वर्तमान साहित्य में उपन्यासकार नरेंद्र कोहली जी ने रामकथा पर आधृत अपने 'अभ्युदय' उपन्यास द्वारा रामकथा के पौराणिक स्त्री पात्रों के माध्यम से अद्यतन नारी–जीवन के चित्रों को खींचने की कोशिश की है। नवजागरण काल के साहित्यों में स्त्रियों के समस्या और उनके समाधान के लिए उठने वाली आवाज की गुंज नरेंद्र कोहली के 'अभ्युदय' उपन्यास में भी सुनी जा सकती है। प्रस्तुत आलेख 'अभ्युदय' उपन्यास में उठाये गए आधुनिक स्त्री–समस्या और उनके मुक्ति की आवश्यकता पर प्रकाश डालता है।

प्रस्तावना

उन्नीसवीं शताब्दी के समस्त भारत में एक नवीन चेतना का प्रचार–प्रसार हुआ, जिसने भारतीय समाज की आँखों पर बंधी कुप्रथाओं, रूढ़ियो, अंधविश्वासों की पट्टियों को खोलकर, उन्हें समाजोत्थान के लिए प्रेरित किया। इस नवीन चेतना ने जड़, गतिहीन और अपरिवर्तनशील हो चुके भारतीय समाज को चेतन, गतिशील और परिवर्तनशील बनने में मदद की। नवीन चेतना से भरे ''इस युग को 'नवजागरण' नाम देने का श्रेय रामविलास शर्मा को जाता है। 'महावीरप्रसाद द्विवेदी और हिन्दी नवजागरण' नामक पुस्तक के द्वारा उन्होंने हिन्दी नवजागरण' की संकल्पना प्रस्तुत की।''[1] हिन्दी नवजागरण के इस युग ने एक ओर जहाँ भारतीय समाज की बुराइयों को दूर करने, उसे धार्मिक अन्धविश्वासों से मुक्ति दिलाने, उसकी आर्थिक दशा सुधारने, तत्कालीन जनता में राजनीतिक चेतना का संचार करने का काम किया; वहीं उसने खड़ीबोली गद्य के माध्यम से हिन्दी साहित्य में आधुनिकता का बीजारोपन भी किया। हिन्दी नवजागरण के युग में भारतीय समाज और जनता में चिंतन, चेतना, तर्क, ज्ञान तथा बौद्धिकता का संचार हुआ था। अतः इसका प्रभाव इस युग के साहित्य पर स्पष्ट दृष्टिगोचर हुआ। साहित्य में वैज्ञानिक सोच का विकास हुआ। इस सोच ने देश की पुरानी रूढ़ियों, परंपराओं और मान्यताओं के वैज्ञानिक परीक्षण पर जोड़ दिया। इतना ही नहीं नवजागरण काल के साहित्य ने देश के सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक पक्षों के यथार्थ को पूरी शिद्दत के साथ प्रस्तुत किया। नयी पीढ़ी के लेखकों के तर्कवादी दृष्टिकोणों की सहायता से भारतीय धर्म संस्कृति की पुनर्व्याख्या की गई और इसके साथ ही धर्म और समाज में रूढ़ होती परंपराओं का विरोध किया गया।

भारत के पुरूष प्रधान समाज में भोगवाद, अन्याय एवं शोषण का शिकार बनती वर्तमान आधुनिक समाज की स्त्रियों के मुक्ति और उनके उत्थान में भी हिन्दी नवजागरण ने एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। नवजागरण युग से पूर्व तथा इस युग के प्रारंभ में नारी जाति के प्रति सम्मान की भावना का अभाव था। स्त्रियों को शिक्षा से वंचित रखा जाता था। सती प्रथा, बाल विवाह जैसी कुप्रथाओं से हिन्दु समाज जकड़ा हुआ था। ऐसे में नवजागरण काल के अनेक समाजसुधारकों एवं साहित्यकारों नें स्त्री की स्वाधीनता एवं स्त्री शिक्षा की आवश्यकताओं को बड़ी ही प्रखरता के साथ उठाया। ''हिन्दी नवजागरण के अग्रदूत भारतेंदु हरिश्चंद्र जी ने 'नारी नर सम होंहि' और स्त्री शिक्षा का समर्थन करते हुए बाल बोधिनी नामक पत्रिका निकाली।''[2]

''सन् 1882 ई0 में बंगाल की मोक्षदायिनी मुखोपाध्याय की बांग्ला कविता 'बनप्रसून' में स्त्री की स्वाधीनता और आलोचनात्मक चेतना का प्रमाण दंखने को मिला, जहाँ उन्होंने उस संग्रह की एक कविता 'बंगाली बाबू' के माध्यम से तथाकथित स्वतंत्र पुरूष समुदाय के स्त्रियों के उद्धार के उनके दावों पर तीखा व्यंग्य किया है। सन् 1882 ई0 में ही महाराष्ट्र की क्रांतिकारी महिला ताराबाई शिन्दे द्वारा लिखी गई पुस्तक 'स्त्री–पुरूष तुलना' में स्त्री दृष्टि को ध्यान में रखकर महाराष्ट्र की पितृसत्तात्मक समाज–व्यवस्था, संस्कृति और पुरूषों की मानसिकता पर तीखी आलोचना की गई।''[3] इस तरह उस काल में अनेक साहित्यिकारों के द्वारा स्त्री स्वाधीनता संबंधी आवाज उठाये गए, किंतु स्त्री की स्वाधीनता का सवाल हिन्दी नवजागरण का मुख्य सवाल नहीं बन सका। वह हमेशा हाशिये पर रहा। नवजागरण के आरंभ में स्त्रियों की पराधीनता और उनकी दारूण स्थिति को लेकर जितनी चिंता व्यक्त की गई,

RRIJM 2015, All Rights Reserved

बाद में वही चिंता कम होते गई। परम्परा और राष्ट्रवाद की वेदी पर स्त्री स्वाधीनता की बलि चढ़ा दी गई। हिन्दी नवजागरण के दौरान स्त्री–स्वाधीनता से जुड़े प्रश्न अपनी पूरी प्रखरता के साथ सामने तब आयें, जब भारतीय स्त्रियाँ अपनी स्वाधीनता की माँग को लेकर स्वयं ही सामने आयीं।

19 वीं शताब्दी में हिन्दी क्षेत्रों में नारी जागरण का वैसा रूप देखने को नहीं मिला, जैसा कि बंगाल और महाराष्ट्र में देखने को मिला। धर्मवीर भारती के संपादनकत्व में सन् 1882 में छपी एक अज्ञात लेखिका की पुस्तक 'सीमंतनी उपदेश' में स्त्रियों के जागरण एवं उनके स्वाधीनता के लिए अत्यन्त प्रखर एवं बुलंद आवाज़ उठायी गई। स्त्री उत्थान के लिए जो आवाज़ नवजागरण काल में उठी, उसकी गुंज तब से लेकर वर्तमान तक के साहित्यिक रचनाओं में स्त्री–विमर्श के रूप में सुनी जा सकती है। स्त्री उत्थान की यह आवाज़ पहले की तुलना में कम नहीं, वरन् और अधिक व्रीव हुई है। यह नवजागरण काल के ही स्त्री आंदोलन की देन है, जिसने वर्तमान में स्त्री समाज के सामाजिक भूमिका को लेकर सोचने–विचारने के मकसद से स्त्री आंदोलन, स्त्री विमर्श और स्त्री अस्मिता जैसे संदर्भों पर बहस की आवश्यकता पर बल दिया। वर्तमान में साहित्यिक रचना कर्म से जुड़े अनेक रचनाकारों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से समाज में स्त्री के दोयम दर्जे की स्थिति को बताकर उनकी स्वतंत्रता, समानता और अस्मिता से जुड़े प्रश्नों को उठाया है।

वर्तमान साहित्य में स्त्री और पुरूष की सामाजिक संरचना पर सवाल खड़ा कर तथा उस पर बहस की माँग करके हिन्दी नवजागरण के स्त्री आंदोलन के अधूरे लड़ाई को कायम रखने एवं प्रगति पर पहुँचाने वाले रचनाकारों में हिन्दी साहित्य के शीर्षस्थ साहित्यकार एवं चिंतक, मनीषी डॉ0 नरेन्द्र कोहली जी का योगदान अविस्मरणीय रहा है। अनूठी शैली एवं नवीन दृष्टिकोण से हिन्दी गद्य साहित्य को एक नया आयाम प्रदान करने वाले कोहली जी ने भारत ही नहीं विश्व साहित्य जगत में अपनी विशुद्ध रचना शैली के कारण अपरिमित ख्याति अर्जित की है। उनकी रचनाएं जितनी गहन और गरिमामय है, उनका व्यक्तित्व भी उतना ही गंभीर और गौरवपूर्ण रहा है। पौराणिक एवं ऐतिहासिक चरित्रों की अनसुलझी पहेली को बहुत ही तार्किकता से सुलझाते हुए, उनके माध्यम से आधुनिक समाज की समस्याओं एवं उनके समाधान को समाज के समक्ष प्रस्तुत करना, कोहली जी की अन्यतम विशेषता रही है। कोहली जी ने राम के जीवन का गहन अध्ययन करके, रामचरित्र पर आधृत 'अभ्युदय' नामक एक वृहद् उपन्यास लिखा है। दीक्षा', 'अवसर', 'संघर्ष की ओर' और 'युद्ध' इन चार खण्डों को अपने में समाहित करती 'अभ्युदय'उपन्यास की कथा वर्तमान की यथार्थ परिस्थितियों से रूबरू कराती है।

सदियों से समाज में स्त्री को त्याग की प्रतिमूर्ति माना जाता रहा है, जिसका संपूर्ण जीवन परिवार की सेवा में व्यतीत होता है। समाज में स्त्री को बाह्य तौर पर देवी, अर्द्धांगिनी, सहधर्मिनी, गृहलक्ष्मी, रानी, त्याग की प्रतिमूर्ति, ममता की मूर्त इत्यादि नाना विशेषणों से मंडित किया जाता रहा है, किन्तु आंतरिक रूप से उसका शोषण भी किया जाता रहा है। समाज में नवजागरण काल के पूर्व से ही पुरूषों की तुलना में स्त्री को कमतर और कमजोर समझा जाता रहा है। कहने को तो हमारा देश इक्कीसवीं सदी में प्रवेश कर चुका है। लेकिन स्त्री के विषय में वह आज भी वही सोच रखता है, जो नवजागरण काल के पूर्व में रखता था। वर्तमान समय में शिक्षा के बढ़ते विकास ने स्त्रियों की स्थिति को सुधारने में अहम् भूमिका निभाई है। किन्तु, फिर भी आधुनिक समाज उन स्त्रियों को सम्मान की दृष्टि से नहीं देखता, जो अपने जीवन के फैसले स्वयं लेती हैं या जो पुरूषों से अलग अपना एक स्वतंत्र अस्तित्व बनाना चाहती हैं। आज भी समाज उन्हें पुरूषों से कमतर समझकर, उन्हें परतंत्रता की बेड़ियों से जकड़ना चाहता है। लैंगिक विभेदीकरण के इसी मुद्दें को कोहली जी ने अपने 'अभ्युदय' उपन्यास में प्रस्तुत कर नारी स्वाधीनता आंदोलन के कार्य को आगे बढाने का काम किया है। उपन्यास में स्त्री से जुड़ी समस्याओं को चित्रित करने के संबंध में कोहली जी का मानना है कि–''मुझे लगता है कि जो बदला है वह केवल प्रसंग मात्र है, सत्य तो नहीं बदला है। उनका स्पष्ट मानना है कि आज भी समाज में अहल्या जैसी स्त्रियाँ हैं, जो इंद्र जैसे राक्षस प्रवृति रखने वाले व्यक्तियों द्वारा शोषित हैं तथा समाज एवं परिवार द्वारा निष्काषित होने की वजह से शिलावत् होकर जीवन व्यतीत करने को मजबूर हैं। जिस प्रकार रामयुगीन समाज में किसी को इतना साहस नहीं था कि वो इंद्र को दोषी माने, न कि अहल्या को। रामायण की यह प्रसंग आज की ही प्रसंग लगती है। आज भी समाज, नारियों को ही दोषी मानकर उनका बहिष्कार करते हैं।''[4]

'अभ्युदय' में संकलित 'दीक्षा', 'अवसर', 'संघर्ष की ओर', 'युद्व' उपन्यास में स्त्री के शोषित स्वरूपों को वर्णित किया गया है। समाज में स्त्रियों पर हो रहे शोषण और अत्याचार को कोहली जी ने पौराणिक रामकथा के संदर्भो एवं प्रचलित स्त्री पात्रों के माध्यम से उजागर किया है। उपन्यास की कथाक्रम में ऐसे अनेक प्रसंग आते हैं जहाँ कथा में आयें अनेक पात्र कोहली जी के तद्युगीन समाज में स्त्रियों के स्वरूप की सच्ची और एक दर्दनाक चित्र को खींचते नजर आते हैं।

वर्तमान समय में प्रत्येक दिन कितनी ही स्त्रियाँ, किशोरियाँ, बच्चियाँ समाज के दरिंदो की वासना का शिकार बनती हैं। उनका अपरहण कर, उन्हें शीलभंग करने एवं उनकी हत्या करने की घटनाएँ प्रत्येक युग में देखने और सुनने को मिलती हैं। कोहली जी ने अपने युग में भी स्त्रियों पर हो रहे शोषणों के इस स्वरूपों को देखा था। शायद यही कारण है कि उन्होंने अपने पहले ही उपन्यास 'दीक्षा' में राजा दशरथ के राज्य सीमा के भीतर स्थित एक ग्राम में रहने वाले निषाद जाति के एक परिवार की स्त्रियों पर राक्षसी प्रवृति वाले आर्य युवकों द्वारा किये गए जघन्य कार्य को आजानुबाहु के माध्यम से प्रस्तुत करने का प्रयास किया। आजानुबाहु, विश्वामित्र को इस जघन्य कार्य की सूचना देते हुए कहते हैं कि–''अवसर देखकर आर्य युवकों का दल ग्राम में घुस आया।.....अकेला अस्वस्थ गहन क्या करता। उन्होंने उसे पकड़कर एक खम्भे के साथ बांध दिया। उसकी वृद्धा पत्नी, युवा पुत्रवधुओं तथा बाला दुहिता को पकड़कर गहन के सम्मुख ही नग्न कर दिया। उन्होंने वृद्ध गहन की आँखों के सम्मुख बारी–बारी उन स्त्रियों का शील–भंग किया। फिर उन्होने जीवित गहन को आग लगा दी और जीवित जलते हुए गहन की उस चिता में लौह शलाकाएं गर्म कर करके उन स्त्रियों के गुप्तांगों पर उनकी जाति चिन्हित की..''[5], सिद्धाश्रम में आर्य शासनकर्मियों द्वारा

निषाद स्त्रियों पर किये गये उक्त यौन वासना–उत्पीड़न का यह वर्णन बिहार में घटित आदिवासी स्त्रियों के यौन–उत्पीड़न से उद्वेलित होकर, समकालीन परिवेश के संदर्भ में नरेन्द्र कोहली जी के द्वारा लिखा गया। सदियों से नारियों के ऊपर हो रहे इस तरह के जघन्य शोषण के कारण पितृसत्तात्मक समाज की व्यवस्था पर प्रश्न चिन्ह लगते आयें हैं।

'अवसर' के एक प्रसंग में वन जाने के क्रम में सीता की भेंट एक ऐसी कन्या से होती है, जिसे धनिक वर्ग का कर्ज न चुका पाने के कारण धनिक की दासी बनकर रहना पड़ता है। उसका सीता से ये कहना कि –''यह तो स्वामी की इच्छा पर है। वह चाहे मेरा विवाह कर दें। वह चाहें मुझे किसी दे दें। वे चाहे मेरा भोग करें। वे चाहें मुझे खा जाएँ .....[6], उसकी उस विवशता को दर्शाता है जहाँ पितृसत्तात्मक समाज व्यवस्था के कारण लड़कियों को सब कुछ सहज ही स्वीकार करना पड़ता है। इस तरह आधुनिक समाज में श्रमिक वर्ग के लोगों की पत्नियों एवं युवा लड़कियों को दास बना कर रखने की इस कुप्रथा को भी कोहली जी ने अपनी रामकथा के माध्यम से समाज के समक्ष प्रस्तुत किया है।

उपन्यास में चित्रित सभी स्त्री पात्र अपने–अपने क्षेत्रों में पीड़ित दिखाई पडती हैं। जिस समाज में पुरूष अपने आप को स्त्री से श्रेष्ठ समझते हैं, वहाँ अबला स्त्रियों पर अत्याचार होने की संभावना से इंकार नहीं किया जा सकता। आधुनिक समाज में व्याप्त अत्याचार की इसी संभावना को कोहली जी ने उपन्यास की कथा में दिखाने का प्रयास किया है। वनवास के समय राम जहाँ रूके थे, वहाँ कुछ ऐसा ही दृश्य राम को देखने को मिला। श्रमिक परिवारों में पुरूष अक्सर मदिरा पीकर पत्नी को आज्ञा देते और यदि किसी बात से वे अप्रसन्न हो जाते तो अपनी इच्छानुसार थप्पड़ों और घुंसों से पीटते। ऐसे में समाज या राज्य की ओर से भी कोई सुरक्षा या सहायता उन स्त्रियों को नहीं मिलती। कथा में स्त्री के ऊपर शोषण के स्तर का यह विचलित कर देने वाला स्वरूप भी वर्तमान समाज में अक्सर देखने को मिल जाता है; जो ये बताने के लिए काफी है कि आज समय जरूर बदला है, किन्तु न तो हमारा समाज बदला है और न ही स्त्रियों के शोषण का स्वरूप एवं सीमा ही बदली है।

आधुनिक वर्तमान समाज में अत्याचार की शिकार बनी निर्दोष स्त्रियाँ समाज में ससम्मान जीने का साहस नहीं जुटा पाती हैं या समाज उन्हें ससम्मान जीने का दूसरा मौका देता ही नहीं है। जबकि दोषी पुरूष को उसके कुकृत्यों के बावजूद निर्दोष मान लिया जाता। समाज द्वारा स्त्री–पुरूषों के लिए अपनाई गई इस दोहरी मापदंड की नीति को भी कोहली जी ने अपने रामकथा में सामाजिक चिंतक ऋषि विश्वामित्र के माध्यम से रखा है, जहाँ खुद विश्वामित्र राम से इस मुद्दे पर कहते दिखाई दिए हैं कि– ''हमारा समाज इन संदर्भों में अभी उतना उदार नहीं है कि उन युवतियों को अपेक्षित सम्मान दे। मर्यादा के रूढ़ परिकल्पना में बँधा हुआ यह मानस यदि उन्हें पतित मानकर उनका अपमान कर बैठा तो? और उनमें से अनेक युवतियों में मुझे गर्भ के लक्षण भी दिखाई पड़े हैं। उनकी संतान के भविष्य के विषय में भी आशंकित हूँ।''[7] विश्वामित्र की यह आशंका वर्तमान समाज को परिलक्षित करती हैं। समाज में अपने अस्तित्व को बचाने की जो लड़ाई स्त्रियों द्वारा हिंदी नवजागरण काल से शुरू की गई, वो आजतक जारी है।

'दीक्षा' उपन्यास में वर्णित 'अहल्या प्रसंग' में शिलाखण्ड में परिणत हुई अहल्या ने भी इक्कीसवीं सदी के समाज के उन स्त्रियों का चित्र प्रस्तुत किया है, जो निर्दोष होते हुए भी सामाजिक अभिशाप की आग में तपने को मजबूर हैं। जिस प्रकार निरपराध होते हुए भी अहल्या को समाज से बहिष्कृत होकर जीवन जीना पड़ा, ठीक उसी प्रकार नवजागरण काल में और उसके बाद के आने वाले काल में भी स्त्रियों को देव इंद्र जैसे लोगों द्वारा अपमानित किया जाता रहा है। 'अहल्या प्रसंग' के माध्यम से कोहली जी ने एक बार फिर समाज की उस व्यवस्था की पोल खोली है, जहाँ यह माना जाता है कि स्त्री ही गलत होती और पुरूष हमेशा सही होता है।

तत्कालीन समाज में स्त्री की परतंत्रता का एक और उदाहरण कोहली जी ने कौशल्या के माध्यम से प्रस्तुत किया है। उन्होंने कौशल्या के माध्यम से पितृसत्तात्मक शासन व्यवस्था में स्त्री के अस्तित्वहीन स्वरूपों को परिलक्षित किया है, जिनका संपूर्ण बचपन पिता की, यौवन पति की तथा वृद्धावस्था पुत्र की शरण में व्यतीत होता है। 'दीक्षा' की पात्रा कौशल्या स्त्रियों की इसी परवशता पर सोचती हैं कि –''मानव वंश में नारी पूर्णतः पति के अधीन है। उसका कोई स्वतंत्र व्यक्तित्व नहीं है। यह वंश समाज में पितृसत्ता को उसकी पराकाष्ठा तक ले गया था। कौशलया ने अपने मायके में भी यही देखा था और ससुरराल में भी यही देख रही थी। वह व्यक्ति नहीं थी, वह उस वंश की पुत्र–वधु थी और उन्हें वहीं रहना था। परिवार के लिए, उसकी सुख–सुविधाओं के लिए उन्हें अपने वयक्तित्व का बलिदान करना था।''[8] स्त्रियों के प्रति आज भी समाज की यही बर्ताव है। वे उनका कोई स्वतंत्र अस्तित्व नहीं मानते। अंधविश्वास एवं रूढ़िवादी से जड़ित यह समाज स्त्री को घर की चहारदीवारी के बीच कैद करके रखने में यकीन रखता है। पति के कार्यों में हस्तक्षेप करने से वर्जित करता है।

किसी भी समाज में स्त्रियों की स्थिति और अधिक शोचनीय तब बन जाती है, जब रक्षक ही भक्षक बन जाता हैं। सेनापति बहुलाश्व के पुत्रों द्वारा निषाद स्त्रियों का शीलभंग करना, भोगवादी पुरूष प्रधान समाज के उस चेहरे को उजागर करता है जहाँ स्त्री को केवल भोग की वस्तु माना जाता है। नवजागरण काल के स्त्री आंदोलन के इतने वर्षों पश्चात् भी स्त्रियों का खुद को असुरक्षित समझना इस बात का सूचक है कि स्त्री स्वाधीनता के लिए किये गए कार्य नवजागरण काल में काफी नहीं थे। एक लम्बी लड़ाई लड़नी बाकी है।

ऐसा नहीं है कि कोहली जी ने मात्र अहल्या, कौशल्या जैसी शोषित स्त्री पात्रों के ही चित्रों को खींचा है। वरन् उन्होंनें ऐसे स्त्री पात्रों के भी चित्र खींचे हैं, जिनमें वर्तमान समाज की स्त्रियों में शोषण के विरूद्ध क्रांति के स्वरों को जागृत करने की क्षमता विद्यमान है। स्त्रियों के सामाजिक लैंगिक विभेदीकरण की समस्या से उत्पन्न शोषणों एवं अत्याचारों को रोकने के लिए सीता को क्रांतिकारी नारी के स्वरूप में चित्रित किया गया है। कोहली जी के रामकथात्मक उपन्यासों में चित्रित सीता को पितृसत्तात्मक समाज द्वारा बनाई

RRIJM 2015, All Rights Reserved

गई स्त्रियों के निष्प्रयोजन भूमिका से दुखित होते दिखाया गया है। राम के साथ प्रशासनिक कार्यों में सहयोग न दे पाने पर उनका यह सोचना कि –''परिवार का ही नहीं सारे समाज का ढ़ांचा ही कुछ ऐसा है कि नारी कहीं शोभा की वस्तु है, कहीं भोग की, कहीं वह अत्यन्त शोषित है, कहीं परजीवी..... समाज से उसका कोई सीधा संबंध नहीं है।''[9] वर्तमान पुरूष प्रधान समाज के प्रति आधुनिक जागृत स्त्रियों के विक्षोभ को प्रकट करने के साथ ही, उन्हें अपनी अस्मिता की रक्षा के लिए विशेष आत्म मंथन करने पर बल देता है। वर्तमान समाज की शोषित स्त्रियों में शोषण के विरूद्ध आवाज उठाने के लिए प्रेरित करने के मकसद से ही कोहली जी ने सीता के अबला स्वरूप का प्रतिकार कर, उन्हें शस्त्र चलाने, नाव चलाने के प्रशिक्षण के साथ–साथ युद्धाभ्यास और संघर्ष प्रतिरोध का प्रशिक्षण लेते दिखया है। वर्तमान स्त्री की स्वतंत्र अस्तित्व की खोज में सीता का यह रूप बहुत ही सहायक है।

इतना ही नहीं कोहली जी ने वर्षों से चली आ रही परम्परागत स्त्री रूप और आधुनिक सोच रखने वाली स्त्री रूप के सम्मिश्रण से एक ऐसी नई सीता के रूप को गढ़ा है, जो रावण द्वारा अपहरण किये जाने पर खुद रावण से शस्त्र माँगती है एवं उसे द्वन्द युद्ध के लिए ललकारती है। सीता का यह आधुनिक रूप वर्तमान स्त्री के अंदर शोषण के विरूद्ध खुद लड़ने की ताकत देता है। नवजागरण काल से उठती आ रही स्त्री स्वातंत्र्य की माँग एवं स्त्री–पुरूषों के प्रति समाज की दोहरी मापदंड को खत्म करने की आवश्यकता को देखते हुए ही, रामायण के पात्रों को एक नए रूप में गढ़ने की कोहली जी की यह कोशिश जहाँ एक ओर नवजागरण काल में स्त्री जागरण संबंधी आंदोलनों को गति देती हैं। वहीं समाज से लैंगिक भेदभाव को खत्म करने तथा शोषण के विरूद्ध शोषितों को खुद आवाज उठाने की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण कदम साबित हुई हैं। नवजागरण काल में स्त्रियों का अपने स्वाधीनता के लिए सजग न रहना, जहाँ स्त्री आंदोलन की विफलता का कारण बना। वहीं 'अभ्युदय' के स्त्री पात्रों की सजगता ने नारी आंदोलन की ज्योत को जलाये रखने में मदद की है।

निष्कर्ष

हिन्दी नवजागरण काल में नारी जागरण के लिए आंदोलन चलाये गए। सती प्रथा एवं बाल विवाह को रोकने तथा स्त्री स्वाधीनता एवं स्त्री शिक्षा के लिए अनेक साहित्यिक प्रयास किये गए। स्त्री–उत्थान के लिए जो आवाज नवजागरण काल में उठी, वही आवाज़ उसके बाद के युगों के साहित्यिक रचनाओं में भी उठती रही है। हिन्दी उपन्यासकार एक लम्बे समय से स्त्री से जुड़ी समस्याओं को अपने कथानक के माध्यम से उठाते आये हैं और साथ ही इनकी समस्याओं का निदान भी प्रस्तुत करते रहे हैं। नरेंद्र कोहली जी एक ऐसे ही उपन्यासकार रहें हैं जिन्होंने अपने रामकथात्मक उपन्यास 'दीक्षा', 'अवसर', 'संघर्ष की ओर' के माध्यम से न सिर्फ रामयुगीन स्त्रियों की समस्याओं को उद्घाटित किया है, अपितु रामकथा के पौराणिक स्त्री पात्रों के माध्यम से वर्तमान समाज के स्त्रियों की विचलित कर देने वाली शोषण के स्वरूपों से साक्षात्कार भी करवाया है। उन्होंने पौराणिक रामकथा के माध्यम से अपने समाज की स्त्रियों के स्वरूपों का जो चित्र हमारे समक्ष खींचा है, वह कहीं न कहीं आज के समाज में भी प्रतिलक्षित है। हिन्दी नवजागरण काल से पूर्व में स्त्री की विचलित कर देने वाली स्थिति ने जिस भांति नवजागरण काल में स्त्री–स्वाधीनता आंदोलन की आवश्कता पर बल दिया; उसी भांति वर्तमान समय में भी नारी उद्धार के लिए एक विशेष चिंतन की माँग करता है।

कोहली जी ने अपने रामकथात्मक उपन्यास 'अभ्युदय' के अहल्या, कौशल्या, सीता जैसी नारी पात्रों के माध्यम से अपने तत्कालीन युग में विद्यमान स्त्री शोषण की विचलित कर देने वाले स्वरूपों के चित्रों को खींचा है। उनके उपन्यास के यह सभी स्त्री पात्र समाज में स्त्री के ऊपर हो रहे शोषण के स्वरूपों एवं सीमाओं का सही आकंलन प्रस्तुत कर, लैंगिक भेदभाव की गंभीरता को विचारने पर जोर देती है। इसके साथ ही पितृसत्तात्मक सामाजिक व्यवस्था में स्त्री के स्थान का सही चित्र भी प्रस्तुत करती है।

शोषित पात्रों के चित्रों को खींचने के साथ ही कोहली जी ने सीता के क्रांतिकारी स्त्री चित्र को भी खींचा है, जो वर्तमान समाज की स्त्रियों में स्त्री क्रांति के स्वरों को जागृत करने की क्षमता रखती हैं। स्त्रियों के सामाजिक लैंगिक विभेदीकरण की समस्या से उत्पन्न शोषणों एवं अत्याचारों को रोकने में एवं स्त्रियों की स्वतंत्र अस्तित्व की खोज में सीता का यह रूप वर्तमान समय में बहुत सहायक है। साथ ही नवजागरण काल में शुरू हुई स्त्री आंदोलन की ज्योत को जलाये रखने में मददगार है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. http://hi.m.wikipedia.org , हिन्दी नवजागरण'
2. https://books.google.co.in, मैनेजर पाण्डेय, अनभै साँचा, पृ0सं0 191
3. https://books.google.co.in, मैनेजर पाण्डेय, अनभै साँचा, पृ0सं0 192
4. मनोरमा मिश्र, मिथकीय चेतना : समकालीन संदर्भ, वाणी प्रकाशन,नई दिल्ली, प्र0 2007
5. अभ्युदय भाग–1, 'दीक्षा', नरेन्द्र कोहली, पृष्ठ सं0 17
6. अभ्युदय भाग–1 'अवसर', नरेन्द्र कोहली पृष्ठ सं0 313
7. अभ्युदय भाग–1 ,'दीक्षा' नरेंद्र कोहली, पृ0 83
8. अभ्युदय भााग–1 'दीक्षा' नरेंद्र कोहली, पृ024
9. अभ्युदय भााग–1 'अवसर' नरेंद्र कोहली, पृ0 213

RRIJM 2015, All Rights Reserved